Roll No : .....

Total No. of Questions : **5**] [Total No. of Printed Pages : **7**

AP–459

M.A. (Final) Examination, 2021

HINDI LITERATURE

(For Due & Imp.)

Paper - IV (iii)

(सूरदास)

(बकाया एवं अंक सुधार हेतु)

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **100***

नोट :– कुल **पाँच** इकाइयाँ हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक इकाई **20** अंक की है।

इकाई–I

1. (अ) किसी **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए। (उत्तर शब्द-सीमा **500** शब्द) :

सूर के जीवन वृत्त से सम्बन्धित सामग्री का मूल्यांकन कीजिए और अपने निष्कर्षों की पुष्टि में उपयुक्त तर्क भी दीजिए।

अथवा

"सूर का व्यक्तित्व विश्व कवि का व्यक्तित्व है।

उनकी साधना, लोक-संग्रह की साधना है।"

इस कथन को स्पष्ट करते हुए सूरदास के कवि व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए। **12**

(ब) निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (उत्तर शब्द-सीमा **50** शब्द) :

(i) सूरदास के 'सूर सागर' ग्रंथ की समीक्षा कीजिए।

(ii) सूर भक्ति की व्यापकता और उसके भेदों को स्पष्ट कीजिए।

(iii) सूर कालीन धार्मिक परिस्थितियों का उल्लेख कीजिए।

(iv) सूर के सौन्दर्य वर्णन की सोदाहरण विवेचना कीजिए।

(v) सूर व तुलसी के बाल वर्णन का तुलनात्मक उल्लेख कीजिए।

(vi) सूर के अन्धत्व पर टिप्पणी लिखिए।

(vii) सूर की प्रबंध रचना क्षमता का मूल्यांकन कीजिए।

(viii) कृष्ण काव्य परम्परा में सूर का स्थान निर्धारित कीजिए। **2×4=8**

इकाई–II

2. (अ) निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए। (उत्तर शब्द-सीमा **500** शब्द) :

"रीतिकालीन श्रृंगारी कवियों की तरह सूर का श्रृंगार वर्णन वासना सिक्त न होकर भक्ति भाव प्रेरित ही सिद्ध होता है।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

अथवा

पुष्टिमार्गीय भक्ति को स्पष्ट कीजिए और बताइए कि सूरदास की पुष्टिमार्गीय भक्ति की प्रमुख विशेषताएँ कौन-कौनसी हैं ? **12**

(ब) निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों का उत्तर दीजिए। (उत्तर शब्द-सीमा **50** शब्द) :

(i) सूर के प्रकृति चित्रण पर एक सारगर्भित टिप्पणी लिखिए।

(ii) सूर की भाषा शैली की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

(iii) सूर की अप्रस्तुत योजना पर टिप्पणी लिखिए।

(iv) सूरदास के समकालीन सम्प्रदायों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कीजिए।

(v) सूर की संगीत कला को क्या देन है ? स्पष्ट कीजिए।

(vi) सूर की अलंकार योजना की विवेचना कीजिए।

(vii) सूरदास का रीतिकालीन कवियों पर क्या प्रभाव पड़ा ? स्पष्ट कीजिए।

(viii) सूर के मत से ईश्वर का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

इकाई–III **2×4=8**

3. (अ) निम्नलिखित में से किसी **एक** अवतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (उत्तर शब्द-सीमा **200** शब्द) :

जसोदा मदन गोपाल सोवावै

देखि सयन गति त्रिभुवन कपै, ईस विरंचि भमावै।

असित अरुनसित अलस लोचन उभय पलक परि आवै।

जनु रविगत संकुचित कमल-जुग निसि अलि उड़न न पावै।

स्याम उदर उससित यों, मानौ दुग्ध-सिंधु छवि पावै।

नाभि-सरोज प्रगट पद्मासन उतरि नाल पछितावै।

कर सिर-तर करि स्याम मनोहर अलक अधिक सो भावै।

सूरदास मानौ पन्नगपति, प्रभु ऊपर फन छावै॥

अथवा

सोमित कर नवमीत लिए।

घुटुरुनि चलत रेनुतन मंडित, मुख दधि लेप किये।

चारु कपोल, लोल-लोचन, गोरोचन तिलक दिए,

लट लटकनि, मनुमत्त मधुप गन मादक मधुहि पिए।

कठुला कंठ, वज्र के हरि नख, राजत रुचिर हिए।

धन्य सूर एकौ पल इहिं सुख, का सतकल्प जिए॥ **7**

(ब) निम्नलिखित में से किसी **एक** प्रश्न का उत्तर **400** शब्दों में दीजिए :

"सूर शृंगार के सम्राट हैं।" इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिए।

अथवा

सूर की दार्शनिक मान्यताओं की विशद् व्याख्या कीजिए। **10**

(स) निम्नलिखित लघुत्तरात्मक प्रश्नों में से किसी **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए। (उत्तर शब्द-सीमा **100** शब्द) :

सूर के पदों की गेयता पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

अथवा

'सूर-सूर तुलसी ससी' इस उक्ति की समीक्षा कीजिए। **3**

इकाई–IV

4. (अ) निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी **एक** अवतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (उत्तर शब्द-सीमा **200** शब्द) :

पलना झूलौ मेरे लाल पियारे।

सुसकवि की वारी हौं बलि-बलि, हठ न करहु तुम नंद दुलारे।

काजर हाथ भरौं जनि मोहन ह्वै है नैना अति रतनारे।

सिर कुलही, पग पहिरि पैजनो, तहाँ जाहुं जहँ□ नंद बबारे।

देखत यह विनोद धरनी धर, मात-पिता बलभद्र ददारे।

सुर-नर-मुनि कौतुहल भूले, देखत सूर सबै जु कहारे॥

अथवा

कबहिं करन गयौ माखन चोरी।

जानै कहा काच्छ तिहारे। कमल नैन मेरौ रतनक सोरी।

दै-दै दगा बुलाइ भवन मैं भुज मरि भेंटति उरज कठोरी।

उर नख चिह्न दिखावत डोलति, कान्ह चतुर भए तू अति भोरी ?

आवत नित प्रति डरहन कै मिस, चिवै रहति ज्यौ चंद चकौरी

सूर सनेह ग्वालि मन अँटक्यौ अन्तर प्रीति जाति नहिं तोरी॥ **7**

(ब) निम्नलिखित में से किसी **एक** प्रश्न का उत्तर **400** शब्दों में दीजिए :

"सूर काव्य में वर्णनात्मकता तथा बिम्ब प्रधानता अधिक है।" सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

अथवा

सूरदास के काव्य-सौष्ठव का सोदाहरण विवेचन कीजिए। **10**

(स) निम्नलिखित लघुत्तरात्मक प्रश्नों में से किसी **एक** प्रश्न का उत्तर **100** शब्दों में दीजिए :

हिन्दी कूट परम्परा में सूर के दृष्टिकूट पदों की समीक्षा कीजिए।

अथवा

सूरदास के काव्य में माधुर्य-भक्ति को स्पष्ट कीजिए। **3**

इकाई–V

5. (अ) निम्नलिखित अवतरण में से किसी **एक** अवतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (उत्तर शब्द-सीमा **200** शब्द) :

दूरि करहि बीना कर धरिबौ।

रथ थाक्यौ, मानौ मृग मोहे नाहिंन होत चंद्र चौ ढरिबौ॥

बीतै जाहि सोई पै जानै, कठिन सुप्रेम पास कौ परिबौ।

प्राननाथ संगहिं तैं बिछुरे, रहत न नैन नीर कौ झरिबौ॥

सीतल चंद अगिन सम लागत, कहिए धीर कौन विधि धरिबौ।

'सूर' सु कमलनयन के बिछुरैं, झूठौ सब जतननि कौ करिबौ॥

अथवा

जोग ठगौरी ब्रज न बिकहै

मूरी के पातनि के बदलैं, को मुक्ताहल दैहे॥

यह ब्यौपार तम्हारौ ऊधौ, ऐसैं ही धर्‌यो रैहे।

जिन पै तैं लै आए ऊधौ, तिनहिं के फट समैंहैं॥

दाख छाँडि कै कटुक निबौरी, को अपने मुख खैहै।

गुनकरि मोही 'सूर' साँवरै, को निरगुन निरबैहै॥ **7**

(ब) निम्नलिखित में से किसी **एक** प्रश्न का उत्तर **400** शब्दों में दीजिए :

भ्रमरगीत परम्परा में सूरदास के भ्रमरगीत का स्थान निर्धारित कीजिए।

अथवा

आधुनिक युग के सन्दर्भ में सूर काव्य की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए। **10**

(स) निम्नलिखित लघुत्तरात्मक प्रश्नों में से किसी **एक** प्रश्न का उत्तर **100** शब्दों में दीजिए :

'सूर' की राधा पर टिप्पणी लिखिए।

अथवा

'सूर' की गोपियों पर टिप्पणी लिखिए। **3**